महिला सुरक्षा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

नर और नारी के संयोग से सृष्टि चलती है। कोई एक सृष्टि को नहीं चला सकता। इसलिए नर और नारी दोनों का सममूल्य है। नारी ही किसी की बेटी होती है, किसी की बहू होती है और किसी की माता, दादी होती है। किन्तु आजकल समाज की विकृत मानसिकता के कारण भ्रूणहत्या का प्रचलन बढ़ गया है। स्त्री और पुरुष का अनुपात सृष्टि में पचास–पचास प्रतिशत का होना चाहिए। सृष्टि को संतुलित रखने और चलाने के लिए यह अनुपात बहुत आवश्यक है। किन्तु भ्रूणहत्या के कारण यह संतुलन बिगड़ता जा रहा है। भ्रूण परिक्षण के द्वारा जब यह पता चलता है कि वह लड़की है तो उसे गर्भ में ही मार दिया जाता है। जब बेटी ही नहीं रहेगी तो संसार कैसे चलेगा। बेटा और बेटी का समान दर्जा होना चाहिए। भारत में यह संतुलन धीरे–धीरे गड़बड़ाता चला जा रहा है। सबसे बड़ा कारण है दहेज प्रथा। दहेज का दानव समाज में बढ़ता जा रहा है यह एक प्रकार का सामाजिक अभिशाप है। लड़की की शादी के समय लड़की के परिवार वालों के द्वारा लड़के या उसके परिवार वालों को नगद या किसी भी प्रकार की किमती वस्तु बिना मूल्य में देने को दहेज कहा जाता है।

नारी जाति को ईश्वर का यह वरदान है कि वह करूणा की मूर्ति है। हर समाज में अपने को संतुलित रखकर के आगे बढ़ सकती है। जब बेटी ससुराल जाती है तो माता–पिता का जितना ध्यान रखती है पुत्र उतना कभी नहीं रखता। पुत्री कभी भी मायके की बुराई सुनना नहीं पसंद करती। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा, सेना, न्याय, चिकित्सा और प्रशासनिक सेवाओं में लड़कियां लड़कों से आगे जा रही है। नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार भी पर्यासरत है। स्त्री शिक्षा पर सरकार खुब पैसा खर्च कर रही है। हर क्षेत्र में स्त्रीयों को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकारी विद्यालयों में बेटियों को पढ़ाने के लिए निःशुल्क शिक्षा सरकार के द्वारा की गई है। बेटी किसी भी रूप में बेटों से कम नहीं है। बेटा और बेटी दोनों समाजरूपी रथ के दो पहिये हैं। दोनों पहिये अगर ठीक से रहेंगे तभी समाजरूपी गाड़ी ठीक से आगे

बढ़ेगी। बेटी दो घरों को संभालती है। जब तक वह पिता के घर में रहती है तो पिता के आंख की पुतली बनी रहती है और जब पति के घर जाती है तो वहां के माहौल में अपने को ढ़ालती है। उस परिवार के रीति–रिवाज, खान–पान, रहन–सहन को अपने अनुकूल बनाती है। इसलिए कोई भी कार्य हो सभी कार्यों में पति और पत्नी दोनों की सहमति होनी चाहिए। पढ़ी–लिखी बेटी ही दोनों कुलों को रोशन करती है। नारी सृष्टि को चलाती है।

नारी भारतीय संस्कृति में बहुत ही पूजनीय है। वेदो में नारी को पूजनीय माना गया है। नारी करुणा की प्रतिमूर्ति होती है। उसके लिए कहा गया है–

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।।

जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् है। इस तथ्य को भगवान् श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा है। संतान को जन्म देने वाली नारी होती है। नारी ही संस्कार देने वाली वह शक्ति है जो बच्चे को संस्कार देकर महापुरुष बना देती है। शिवाजी को शिवाजी बनाने वाली उनकी मां ही थी। नारी का संसार में सबसे ऊंचा स्थान है कोई भी क्षेत्र हो हर क्षेत्र में नारी अग्रणी हो रही है। सफलता में नारी पुरुष से किसी भी रूप में कम नहीं है। नर और नारी गृहस्थ रूपी रथ के दो पहिये हैं। दोनों के संयोग से सृष्टि चलती है।

नारी आजकल ऊंचे–ऊंचे पदों पर अपने परिश्रम और बुद्धिबल से आरुढ़ होकर सुशोभित कर रही है। नारी की लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती अनेक रूपों में पूजा होती है। शिक्षा शालाओं से लेकर सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों पर नारी अपनी शक्ति और बुद्धिवैभव से उच्च स्थान प्राप्त कर रही है। राजनैतिक क्षेत्र में भी नारी ऊंचे–ऊचे पदों पर प्रतिष्ठित है। जीवन के हर क्षेत्र में विकास के लिए नारी आगे आ रही है और पुरुषों से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है। विश्व के प्रायः सभी देशों में नारी राजनैतिक क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। भारत में सेना, पुलिस, अर्धसैनिक बल, प्रशासनिक सेवाओं, शिक्षा समाज सेवा और विज्ञान के क्षेत्र में ऊंचे–ऊंचे पदो पर नारी आसीन है।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभाध्यक्ष, मुख्यमंत्री, मंत्री, सांसद और विधायक जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर अपनी योग्यता और अनुभव के आधार पर नियुक्त होकर नारी देश के गौरव को बढ़ा रही है। सेना और अर्द्धसैनिक बलों जैसे महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त होकर नारी देश की रक्षा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। चाहे समाज सेवा हो या राष्ट्रसेवा हर क्षेत्र में नारी का योगदान सराहनीय है। नारियां भारत में हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। इसीलिए कहा गया है–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राक्रियाफलाः।।

अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं और जहां पर नारी की पूजा नहीं होती वहां पर सब क्रियाएं निष्फल सिद्ध होती है। इसलिए महिलाओं को सशक्त बनाकर नये भारत का निर्माण किया जा सकता है।